शरद ऋतु की विदाई का पर्व है बसन्त पंचमी

आज बसन्त पंचमी पर विशेष

बसन्त पंचमी एक प्रसिद्ध भारतीय त्योहार है। इस दिन विद्या की देवी सरस्वती की पूजा सम्पूर्ण भारत में बड़े उल्लास के साथ की जाती है। इस दिन स्त्रियां पीले वस्त्र धारण करती हैं। बसन्त पंचमी के पर्व से ही वसंत ऋतु का आगमन होता है। शांत, ठंडी, मंद वायु, कटु शीत का स्थान ले लेती है तथा सब को नवप्राण व उत्साह से स्पर्श करती है। यह विद्यार्थियों का भी दिन है, इस दिन विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती की पूजा आराधना भी की जाती है। बसन्त ऋतु तथा पंचमी का अर्थ है. शुक्ल पक्ष का पांचवां दिन। अंग्रेजी कलेंडर के अनुसार यह पर्व जनवरी.फरवरी तथा हिन्दू तिथि के अनुसार माघ के महीने में मनाया जाता है।

बसन्त उत्तर भारत तथा समीपवर्ती देशों की छह ऋतुओं में से एक ऋतु है, जो फरवरी मार्च और अप्रैल के मध्य इस क्षेत्र में अपना सौंदर्य बिखेरती है। ऐसा माना गया है कि माघ महीने की शुक्ल पंचमी से बसन्त ऋतु का आरंभ होता है। फाल्गुन और चैत्र मास बसन्त ऋतु के माने गए हैं। फाल्गुन वर्ष का अंतिम मास है और चैत्र पहला। इस प्रकार हिंदू पंचांग के वर्ष का अंत और प्रारंभ बसन्त में ही होता है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है। मौसम सुहावना हो जाता है। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं। खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते हैं। अतरू रंग रंग और उत्सव मनाने के लिए यह ऋतु सर्वश्रेष्ठ मानी गई है और इसे ऋतुराज कहा गया है। भारत में पतझड़ ऋतु के बाद बसन्त ऋतु का आगमन होता है। हर तरफ रंग.बिरंगे फूल खिले दिखाई देते हैं। खेतों में पीली सरसों लहलहाती बहुत ही मदमस्त लगती है। इस समय गेहूं की बालियां भी पक कर लहराने लगती हैं। जिन्हें देखकर किसान बहुत हर्षित होते हैं। चारों ओर सुहाना मौसम मन को प्रसन्नता से भर देता है। इसीलिये वसंत ऋतु को सभी ऋतुओं का राजा अर्थात ऋतुराज कहा गया है। इस दिन भगवान विष्णु, कामदेव तथा रति की पूजा की जाती है। इस दिन ब्रह्मपाण्ड के रचयिता ब्रह्मा जी ने सरस्वती जी की रचना की थी। इसलिए इस दिन देवी सरस्वती की पूजा भी की जाती है।

बसन्त पंचमी का दिन भारतीय मौसम विज्ञान के अनुसार समशीतोष्ण वातावरण के प्रारंभ होने का संकेत है। मकर सक्रांति पर सूर्य नारायण के उत्तरायण प्रस्थान के बाद शरद ऋतु की समाप्ति होती है। हलांकि विश्व में बदले हुए मौसम ने अनेक प्रकार के गणित बिगाड़ दिये हैं पर सूर्य के अनुसार होने वाले परिवर्तनों का उस पर कोई प्रभाव नहीं है। हमारी संस्कृति के अनुसार पर्वों का विभाजन मौसम के अनुसार ही होता है। इन पर्वों पर मन में उत्पन्न होने वाला उत्साह स्वप्रेरित होता है। सर्दी के बाद गर्मी और उसके बाद बरसात फिर सर्दी का बदलता क्रम देह में बदलाव के साथ ही प्रसन्नता प्रदान करता है। ग्रंथों के अनुसार देवी सरस्वती विद्या, बुद्धि और ज्ञान की देवी हैं। अमित तेजस्विनी व अनंत गुणशालिनी देवी सरस्वती की पूजा.आराधना के लिए माघमास की पंचमी तिथि निर्धारित की गयी है। बसन्त पंचमी को इनका आविर्भाव दिवस माना जाता है। ऋग्वेद में सरस्वती देवी के असीम प्रभाव व महिमा का वर्णन है। मां सरस्वती विद्या व ज्ञान की अधिष्ठात्री हैं। कहते हैं जिनकी जिव्हा पर सरस्वती देवी का वास होता है, वे अत्यंत ही विद्वान व कुशाग्र बुद्धि होते हैं। बहुत लोग अपनी इष्ट मां सरस्वती को मानकर उनकी पूजा.आराधना करते हैं। जिन पर सरस्वती की कृपा होती है, वे ज्ञानी और विद्या के धनी होते हैं।

बसन्त पंचमी का दिन सरस्वती जी की साधना को ही अर्पित है। शास्त्रों में भगवती सरस्वती की आराधना व्यक्तिगत रूप में करने का विधान है, किंतु आजकल सार्वजनिक पूजा.पाण्डालों में देवी सरस्वती की मूर्ति स्थापित कर पूजा करने का विधान चल निकला है। यह ज्ञान का त्योहार है, फ्लतरू इस दिन प्रायरू शिक्षण संस्थानों व विद्यालयों में विभिन्न कार्यक्रम होते है। विद्यार्थी पूजा स्थान को सजाने.संवारने का प्रबन्ध करते हैं। महोत्सव के कुछ समाह पूर्व ही, विद्यालय विभिन्न प्रकार के वार्षिक मनाना प्रारम्भ कर देते हैं। संगीत, वाद. विवाद, खेल. कूद प्रतियोगिताए एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

पुराणों में उल्लेख मिलता है कि देवताओं का एक अहोरात्र दिन.रात मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है, अर्थात उत्तरायण देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन रात्रि कही जाती है। सूर्य की क्रांति 22 दिसम्बर को अधिकतम हो जाती है और यहीं से सूर्य उत्तरायण शनि हो जाते हैं। 14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं और अगले 6 माह तक उत्तरायण रहते हैं। सूर्य का मकर से मिथुन राशियों के बीच भ्रमण उत्तरायण कहलाता है। देवताओं का दिन माघ के महीने में मकर संक्रांति से प्रारम्भ होकर आषाढ़ मास तक चलता है। तत्पश्चात आषाढ़ मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी से कार्तिक मास शुक्ल पक्ष एकादशी तक का समय भगवान विष्णु का निद्रा काल अथवा शयन काल माना जाता है। इस समय सूर्यदेव कर्क से धनु राशियों के बीच भ्रमण करते हैं, जिसे सूर्य का दक्षिणायन काल भी कहते हैं। सामान्यतरू इस काल में शुभ कार्यों को वर्जित बताया गया है।

चूंकि बसन्त पंचमी का पर्व इतने शुभ समय में पड़ता है, अतरू इस पर्व का स्वतरू ही आध्यात्मिक, धार्मिक, वैदिक आदि सभी दृष्टियों से अति विशिष्ट महत्व परिलक्षित होता है। प्राचीन कथाओं के अनुसार ब्रह्मा जी ने विष्णु जी के कहने पर सृष्टि की रचना की थी। एक दिन वह अपनी बनाई हुई सृष्टि को देखने के लिए धरती पर भ्रमण करने के लिए आए। ब्रह्मा जी को अपनी बनाई सृष्टि में कुछ कमी का अहसास हो रहा था। लेकिन वह समझ नहीं पा रहे थे कि किस बात की कमी है। उन्हें पशु.पक्षी, मनुष्य तथा पेड़.पौधे सभी चुप दिखाई दे रहे थे। तब उन्हें आभास हुआ कि क्या कमी है। वह सोचने लगे कि एसा क्या किया जाए कि सभी बोले, गाएं और खुशी में झूमे। ऐसा विचार करते हुए ब्रह्मा जी ने अपने कमण्डल से जल लेकर कमल पुष्पों तथा धरती पर छिड़का। जल छिड़कने के बाद श्वेत वस्त्र धारण किए हुए एक देवी प्रकट हुईं। इस देवी के चार हाथ थे। एक हाथ में वीणा, दूसरे हाथ में कमल, तीसरे हाथ में माला तथा चतुर्थ हाथ में पुस्तक थी। ब्रह्मा जी ने देवी को वरदान दिया कि तुम सभी प्राणियों के कण्ठ में निवास करोगी। सभी के अंदर चेतना भरोगी, जिस भी प्राणी में तुम्हारा वास होगा वह अपनी विद्वता के बल पर समाज में पूज्यनीय होगा। ब्रह्मा जी ने कहा कि तुम्हें संसार में देवी सरस्वती के नाम से जाना जाएगा। ब्रह्मा जी ने देवी सरस्वती को वरदान देते हुए कहा कि तुम्हारे द्वारा समाज का कल्याण होगा इसलिए समाज में रहने वाले लोग तुम्हारा पूजन करेंगे।

बसन्त पंचमी को सभी शुभ कार्यों के लिए अत्यंत शुभ मुहूर्त माना गया है। मुख्यतरू विद्यारम्भ, नवीन विद्या प्राप्ति एवं गृह प्रवेश के लिए बसन्त पंचमी को पुराणों में भी अत्यंत श्रेयस्कर माना गया है। बसन्त पंचमी को अत्यंत शुभ मुहूर्त मानने के पीछे अनेक कारण हैं। यह पर्व अधिकतर माघ मास में ही पड़ता है। माघ मास का भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से विशेष महत्व है। इस माह में पवित्र तीर्थों में स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है। दूसरे इस समय सूर्यदेव भी उत्तरायण होते हैं। इसलिए प्राचीन काल से बसन्त पंचमी के दिन देवी सरस्वती की पूजा की जाती है अथवा कह सकते हैं कि इस दिन को सरस्वती के जन्म दिवस के रुप में मनाया जाता है।

बसन्त पंचमी के दिन विद्यालयों में भी देवी सरस्वती की आराधना की जाती है। भारत के पूर्वी प्रांतों में घरों में भी विद्या की देवी सरस्वती की मूर्ति की स्थापना की जाती है और वसंत पंचमी के दिन उनकी पूजा की जाती है। उसके बाद अगले दिन मूर्ति को नदी में विसर्जित कर दिया जाता है। देवी सरस्वती को ज्ञान, कला, बुद्धि, गायन.वादन की अधिष्ठात्री माना जाता है। इसलिए इस दिन विद्यार्थी, लेखक और कलाकार देवी सरस्वती की उपासना करते हैं। विद्यार्थी अपनी किताबें, लेखक अपनी कलम और कलाकार अपने म्यूजिकल उपकरणों और बाकी चीजें मां सरस्वती के सामने रखकर पूजा करते हैं. यह परंपरा पूरे देश में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

कडकड़ाती ठंड के बाद बसंत ऋतु में प्रकृति की छटा देखते ही बनती है। पलाश के लाल फूल, आम के पेड़ों पर आए बौर, हरियाली और गुलाबी ठंड मौसम को सुहाना बना देती है। यह ऋतु सेहत की दृष्टि से भी बहुत अच्छी मानी जाती है। मनुष्यों के साथ पशु.पक्षि यों में नई चेतना का संचार होता है। इस दिन पवित्र नदियों में स्नान का विशेष महत्व है। देश के कई स्थानों पर पवित्र नदियों के तट और तीर्थ स्थानों पर बसंत मेला भी लगता है। राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में तो बसंत पंचमी के दिन से रात में लोग समूह में एकत्रित होकर चंग ढफ़ बजाकर धमाल गाकर होली के पर्व का शुभारम्भ करते है।

रमेश सर्राफ धमोरा
(ये लेखक के अपने विचार है)

आज राजा भोज जंयती पर विशेष

परम्वीर राजा भोज का स्मरण होते ही सत्य, साहस, ज्ञान, कौशल और जलाभिषेक का बोध होने लगता हैं। सम्यक् कालजयी बनकर भूतो न भविष्यति, राजा भोज यथा दूजा राजा की मीमांसा में राजा.महाराजाओं के देश में राजा भोज राजाओं के राजा कहलाएं। इनके राज में प्रजा को सच्चा न्याय और जीने का वाजिब हक मिला। ऐसे महाप्रतापी शूरवीर राजा भोज का जन्म बसंत पंचमी को संवत् 1037 में उज्जैन के परमार पंवार राजवंश में हुआ। उनके पिता सिंधुराज तथा माता महारानी सावित्री देवी थी। पत्नि महारानी लीलावती उन्हीं की तरह बहुत बडी विदुषी थी।

राजा भोज का मंत्रमुग्ध शौर्य और ऐश्वर्य

उज्जैन, धार के परमार ;पंवारद्ध कूल के 24 राजाओं में वे नौवे राजा कहलाए जो सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हुए। अराध्य के शौर्य व ऐश्वर्य का अमर गुंजार युगिन पंवारों के मन.मन और जन.गन को मंत्रमुग्ध, संस्कारित तथा आत्मकेंद्रित करेंगा। यथार्थ, पंवार राज वंशी राजा भोज का राजकाल 1000 से 1055 तक था। उन्होंने अपनी राजधानी उज्जैन से धार स्थांतरित की थी। राजा भोज पहले राजा हुए जिन्होंने भारतीय समाज को संगठित कर बाहरी हमलों का सामना किया। वे हिन्दु धर्म के संरक्षक थे। एक योद्धा की भांति हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए सर्वस्त्र हुंकार भरी। उन्होंने सोमनाथ, केदारनाथ, रामेश्वरम् आदि मंदिरों का नवनिर्माण कर धर्मपीठों को सशक्त बनाया था। उनकी मृत्यु 13 संवत् 1112 को हुई। पंवार वंश का पताका लहराकर राजा भोज दैदिप्यमान आदर्श हिन्दु सम्राट के रूप में भारतीय इतिहास में अमर हो गए।

अमर गाथा का परचम यही नहीं थमता बल्कि आगे तीव्र गति से आगे बढता हैं। लिहाजा, चक्रवर्ती सम्राट राजा भोज मध्ययुगीन भारत के इतिहास में सम्राट अशोक तथा विक्रमादित्य के समान कुशल शासक, विद्वान कवि, दानी, ज्ञानी, त्यागी, धार्मिक, सदाचारी थे। साथ ही ज्ञान.विज्ञान, कला.साहित्य के पुरूकर्था होने के अलावा लोक सुख.समृद्धि के वास्ते सदैव तत्पर सुरक्षा दक्ष प्रजा में अगाध लोकप्रिय अ द्वि ती य चक्रवर्ती राजा हुए। प्रत्युत, राजा भोज महान व्यक्तित्व से विभूषि?त थे। उन्हें म हे श्व रा ज परमेश्वर, सार्वभौम आदि उपाधियों से अलंकृत किया गया था। उनका राज उत्तर में हिमालय से दक्षिण में मलय तक व पूर्व में बंगाल से पश्चिम में गुजरात तक था। राजा भोज सभी प्रकार के शस्त्र तथा शास्त्रों में निपुण थे। उन्होंने संस्कृत और प्राकृत भाषा में 84 ग्रंथ लिखे। यथा धर्म, खगोल विद्या, कला, वास्तुकला, भवननिर्माण, काव्य और औषधी शास्त्र आदि विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखी जो अभी भी विध्मान हैं। स्तुत्य, राजा भोज ने बहुत से युद्ध किए और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की जिससे सिद्ध होता है कि उनमें असाधारण योग्यता थी। यद्यपि उनके जीवन का अधिकांश समय युद्धक्षेत्र में बीता तथापि उन्होंने अपने राज्य की उन्नति में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न होने नहीं दी। उन्होंने मालवा के नगरों व ग्रामों में बहुत से मंदिर और जलाशय बनवाए। गोया उनमें से अब तक बहुत कम का ही पता चल पाया। ऐसे विविध युगीन, विविध नृपों में उपलब्ध होने वाले गुणों का समाहार किए हुए राजा भोज भारतीय संस्कृति के प्रतीक और अनमोल धरोहर बन गए। यथेष्ट, वर्तमान मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल को राजा भोज ने ही बसाया था। तब उसका नाम भोजपाल नगर था। जो कि कालांतर में भूपाल और फिर भोपाल हो गया अब, भोजपाल करने की पूरजोर कोशिश जारी है, देखना यह कब सराबोर होती है। राजा भोज ने भोजपाल नगर के पास ही एक समुद्र के समान विशाल तालाब का निर्माण कराया था। जो पूर्व और दक्षिण में भोजपुर मे विशाल शि?त मंदिर तक जाता था। आज भी भोजपुर जाते समय रास्तें में शि?वमंदिर के पास उस तालाब की पत्थरों की बनी विशाल पाल दिखाई पडती हैं। सम्यक् उस तालाब के पानी को बहुत पवित्र और बीमारियों को ठीक करने वाला माना जाता था।

गौरतलब हो कि राजा भोज को चर्म रोग हो गया था तब किसी ऋषि या वैद्य ने उन्हें इस तालाब के पानी में स्नान करने और उसे पीने की सलाह दी थी। जिससे उनका चर्मरोग ठीक हो गया था। चरिकाल से ही राजा भोज ने जल बचाओं का शंखनाद किया था जो आज भी कालजयी बना हुआ है। इसी मायनों में इन्हें जलदूत कहें तो कोई अतिश्योक्तिन नहीं होगी। अभिभूत, अलौकिक ज्ञानपुंज और पराक्रम से सराबोर दानवीर राजा भोज के जीवन का प्रत्येक अंश भूतो न भविष्यति, राजा भोज यथा दूजा राजा का भावार्थ परिलच्छित करता है। सोदेशा परम्वीर कहें या राजवीर, दानवीर, महावीर, ज्ञानवीर, धर्मवीर, कर्मवीर और नीरधीर राजा भोज की अमर गुंजार अंतस में अजर यशोगीत रहेंगी।

हेमेन्द्र क्षीरसागर
(ये लेखक के अपने विचार है)

कोटा में आत्महत्या करने वाली छात्रा का सुसाइड नोट

मैं भारत सरकार और मानव संसाधन मंत्रालय से कहना चाहती हूं, कि अगर वो चाहते हैं, कि कोई बच्चा न मरे, तो जितनी जल्दी हो सके इन कोचिंग संस्थानों को बंद करवा दें,ये कोचिंग संस्थान छात्रों को खोखला कर देते हैं। पढ़ने का इतना दबाव होता है, कि बच्चे बोझ तले दब जाते हैं।

कृति ने लिखा है कि वो कोटा में कई छात्रों को डिप्रेशन और स्ट्रेस से बाहर निकालकर सुसाईड करने से रोकने में सफल हुई। लेकिन खुद को सुसाइड करने से नहीं रोक पाई।बहुत लोगों को विश्वास नहीं होगा कि मेरे जैसी लड़की जिसके 90 मार्क्स हो,वो सुसाइड भी कर सकती है,लेकिन मैं आप लोगों को समझा नहीं सकती कि मेरे दिमाग और दिल में कितनी नफ़रत भरी है।

अपनी मां के लिए उसने लिखा. ष्आपने मेरे बचपन और बच्चा होने का फ़ायदा उठाया,और मुझे विज्ञान पसंद करने के लिए मजबूर करती रहीं। मैं भी विज्ञान पढ़ती रहीं,ताकि आपको खुश रख सकूं। मैं क्रांटम फ़िजिक्स और एस्ट्रोफ़िजिक्स जैसे विषयों को पसंद करने लगी। उसमें ही बीएससी करना चाहती थी। लेकिन मैं आपको बता दूं कि मुझे आज भी अंग्रेजी साहित्य और इतिहास बहुत अच्छा लगता है।क्योंकि ये मुझे मेरे अंधकार के वक्त में मुझे बाहर निकालते हैं। कृति सुसाइड नोट में अपनी मां को चेतावनी देती है कि. ष्इस तरह की चालाकी और मजबूर करने वाली हरकत 11 वीं क्लास में पढ़नेवाली छोटी बहन से मत करना,वो जो बनना चाहती है,जो पढ़ना चाहती है। उसे वो करने देना। क्योंकि वो उस काम में सबसे अच्छा कर सकती है। जिससे वो प्यार करती है। . माता.पिता के लिए सबक

इस सुसाइड नोट को पढ़कर किसी का भी मन विचलित होगा। इस होड़.में हम अपने बच्चों के सपनो को छीन रहे है। बचपन छीन कर उन्हें प्रतिस्पर्धा करने विवश कर रहे हैंष्मां का बेटा.बेटी डॉक्टर बन गया, तुम्हें भी डॉक्टर बनाना है। फ्मां की बेटी.बेटा सीकरष्कोटा हॉस्टल में है। हम भी वही पढ़ाएंगे। चाहे उस बच्चे के सपने और क्षमता उस तरह की ना हो। फ़िर भी हम बच्चों को अपनी इच्छा के अनुसार जबरदस्ती उनसे वह काम कराना चाहते हैं जो हम चाहते हैं। आज भारत के स्कूल;कोचिंग संस्थानद्ध बच्चों को परिवारिक रिश्तों का महत्व और जीवन किस तरह जीना है नही सिखा पा रहे हैं।उन्हें असफ़लताओं या समस्याओं से लड़ना नही सीखा पा रहे हैं। उनके जहन में सिर्फ एक.दूसरे से प्रतिस्पर्धा और काल्पनिक कैरियर बनाने का दबाव बनाया जा रहा है जो जहर बनकर उनकी जिंदगियां खत्म कर रहा है। जो कमजोर है, वह बच्चा आत्महत्या कर रहा है,जो थोड़ा मजबूत है, वह नशे का शिकार हो जाता है। प्रतिस्पर्धा में जब बच्चे असफ़ल होते है,तो उन्हें ये पता ही नही है कि वह इससे कैसे निपटें। उनका कोमल हृदय इस नाकामी से टूट जाता है। मां बाप के दबाव से वह उनसे अपनी बात कह भी नहीं पाते हैं। कहते भी हैं, तो मां.बाप समझने के लिए तैयार नहीं होते हैं। जिसके कारण भारत में बड़ी तेजी के साथ बच्चे और युवाओं में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अब तो 10 . 12 साल के बच्चे भी आत्म हत्या के शिकार हो रहे हैं। इस स्थिति में माता पिता और सरकार को सोचना होगा, कि वह अपने बच्चों को किस ओर ले जाना चाहते हैं।

सनत जैन
(ये लेखक के अपने विचार है)

अमृत वाणी

जल में मीन का मौन हैए पृथ्वी पर पशुओं का कोलाहल और आकाश में पछियों का संगीत पर मनुष्य में जल का मौन पृथ्वी का कोलाहल और आकाश का संगीत सब कुछ है। -रवींद्रनाथ ठाकुर,

राज-काज

कर्जमाफी पर घिरते मोदी

लोकसभा में अपने भाषण के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसान कर्जमाफी को लेकर जैसे ही विपक्ष को आड़े हाथों लेते हुए कर्नाटक की कांग्रेस और जेडीएस सरकार पर हमला बोला वैसे ही उन्हें जवाब भी मिल गया। दरअसल प्रधानमंत्री मोदी ने दावा किया था कि कर्नाटक सरकार ने किसानों की कर्जमाफी का वादा पूरा नहीं किया, जिसके जवाब में कर्नाटक के मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी ने कहा कि उनकी सरकार ने तो 4 लाख किसानों को कर्जमाफी का लाभ पहुंचाया है। इस मामले में विरोधियों ने सवाल किया कि जब किसान आत्महत्या कर रहे थे तो बतौर प्रधानमंत्री मोदी ने क्या किया, इसका जवाब देने की बजाय गैरभाजपाई राज्य सरकारों पर निशाना साधना वाकई झूठ और जुमलेबाजी में माहिर होने का सुबूत देना जैसा ही है। पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा ने सवाल किया कि कर्नाटक सरकार ने कर्जमाफी का वादा किया था, जो जारी है, लेकिन भाजपा ने राम मंदिर, स्वच्छ गंगा, 15 लाख देने का वादा किया था, लेकिन उस पर अभी तक कुछ नहीं हुआ है। इस प्रकार मोदी अब घिरते जा रहे हैं।

शर्म तुमको मगर आती नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने मुजफ्फरपुर शेल्टर होम मामले में तल्ख टिप्पणी क्या की विरोधी दलों ने नीतीश सरकार पर हमला ही बोल दिया। यहां तक कि आरजेडी सुप्रीमो और चारा घोटाला में सजा काट रहे लालू प्रसाद यादव तक ने तंज कसते हुए ट्वीट किया कि श्क्या हो नीतिशए कुछ शर्म बचल बा कि नाहींश। इस पर नेता प्रतिपक्ष और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतिश कुमार में शर्म ही नहीं बची है। रिट्वीट करते हुए कहा कि श्शर्म होगी तो करेंगे नाघ् शर्म तो इन्होंने जिस दिन जनादेश की डकैती की थी, उसी दिन उतार फेंकी थी। जिसमें शर्म नहीं बची हो उसे क्या कहते हैंश्ष् इस प्रकार नीतिश को पुराने जमाने की याद दिलाने का सिलसिला शुरू हो गया है और जानकारों की मानें तो बेशर्मी का असर लोकसभा चुनाव में नजर आएगा ही आएगा।

यहां भी गडकरी की तारीफ

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने अपनी ही सरकार के कामकाज को लेकर जो कहा उससे विपक्ष खासा उत्साहित नजर आ रहा है। यही वजह है कि पहले राहुल गांधी ने उनकी पीठ थपथपाई तो वहीं दूसरी तरफलोकसभा में भारतमाला परियोजना से संबंधित प्रश्न के जवाब के दौरान गडकरी के काम की जमकर तारीफ हुई। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष और यूपीए चेयरपर्सन सोनिया गांधी ने भी इस दौरान मेज थपथपाकर अपना समर्थन जताया। इस घटनाक्रम से देश में यह संदेश जा रहा है कि झूठ और जुमलेबाजों से विपक्ष परेशान है, लेकिन सच कहने वाले और आईना दिखाने वाले चाहे सरकार में ही क्यों न हों उन्हें उनका समर्थन मिलता रहेगा। सभी यही कह रहे हैं कि अच्छा काम करने वाले की तो तारीफ होना ही चाहिए इससे स्वस्थ विपक्ष के होने का उदाहरण भी मिलता है। इस तरीफ के बाद गडकरी अपने आपको भाग्यवान बता रहे हैं, क्योंकि तमाम पार्टी के लोग उनके काम की तारीफ जो कर रहे हैं।

गोवा में चुनाव की सुगबुगाहट

गोवा राज्य में हालात बेकाबू हैं, जिसे लेकर भाजपा के अंदर ही नाराजगी देखी जा रही है। इस समाचार के साथ ही कयास लगाए जा रहे हैं कि लोकसभा चुनाव के साथ ही गोवा विधानसभा चुनाव भी संपन्न कराए जा सकते हैं। इसकी वजह यह है कि पूर्व मुख्यमंत्री लक्ष्मीकांत परसेकर ने जहां बगावती सुर छेड़ रखे हैं तो वहीं भाजपा की दोनों सहयोगी पार्टियां महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी और गोवा फारवर्ड पार्टी के नेताओं ने भी अपने तीखे तेवर दिखाने शुरु कर दिए हैं। मुख्यमंत्री मनोहर पर्रिकर के खराब स्वास्थ्य को लेकर दोनों ही पार्टी के नेताओं में मुख्यमंत्री बनने की लालसा जाग गई है और इसलिए कहा जा रहा है कि गोवा में चुनाव हो सकते हैं, इससे कम में तो कांग्रेस नेता भी मानने को तैयार नहीं दिख रहे हैं और कहा जा रहा है कि भाजपा ने कांग्रेस के 3 विधायकों को तोड़कर कोई मैदान नहीं मार लिया है, क्योंकि अब तो उसकी अपनी ही पार्टी के नेता विरोध करते नजर आ रहे हैं।

बेभरोसा हुए अन्ना

देश के प्रमुख समाजसेवी और गांधीवादी विचारधारा वाले अन्ना हजारे का जलवा अब वैसा नहीं रहा जैसा कि 2011 से 2014 के बीच दिखा था। दरअसल लोकपाल विधेयक एवं अन्य मांगों को लेकर अन्ना एक बार फिर अनशन पर बैठे लेकिन इस बार उन्हें वो समर्थन हासिल नहीं हुआ, जैसा कि 2011 में मिला था। मीडिया ने भी कहा कि गनीमत रही कि इस अनुशन में उनके गांव और आसपास के लोग साथ रहे, वर्ना पूरी तरह फ्लॉप शो हो जाता। भ्रष्टाचार के खिलाफ देशव्यापी मुहिम का चेहरा बने अन्ना का जलवा इसलिए भी खत्म प्रायः माना जा रहा है क्योंकि उनकी टीम के तमाम लोग कहीं न कहीं लाभांवित हो अपने.अपने रास्ते हो लिए हैं और ऐसे में अन्ना भी किसी पर भरोसा नहीं कर पा रहे हैं और न ही कोई और उन पर भरोसा जतला रहा है।

असली हीरो कौन

मध्य प्रदेश में भाजपा नेता अपनी हार को पचा नहीं पा रहे हैं, जबकि पूर्व मुख्यमंत्री अपनेआप को हीरो बताए सभी को आईना दिखाने का काम करते नजर आ रहे हैं। मप्र विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष ने पार्टी कार्यकर्ताओं को निराश और उनके मनोबल टूटने की बात कही तो पूर्व मुख्यमंत्री ने उनकी बात काटते हुए कह दिया कि कार्यकर्ता निराश नहीं बल्कि गुस्से में हैं। ऐसे में एक कार्यक्रम के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने खुद को जनता का असली हीरो करार दिया, इस पर गोपाल भार्गव ने भी मौका नहीं चूका और कह दिया कि जनता को तय करने दें कि असली हीरो कौन है। गौरतलब है कि लगातार तीन बार के मुख्यमंत्री रहे शिवराज सिंह अपने आपको आज भी हीरो की ही तरह पेश करते दिख रहे हैं, जिसे पार्टी के लोग ही पचा नहीं पा रहे हैं, इसलिए विरोधियों की कौन बात करे यहां तो पार्टी के नेता ही सवाल करते दिख रहे हैं कि जब प्रदेश में हार चुके हैं तो फिर हीरोगिरी किसी दिखाई जा रही है।